The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 3 | October 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

मुगलकालीन मुस्लिम शिक्षा के केन्द्र

सर्वेश चतुर्वेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग, हिन्दु कॉलेज मुरादाबाद

ARTICLE DETAILS

Research Paper

कूट शब्द :
मदरसा, मकतब, अनुदान

शोध सारांश

दिल्ली सल्तनत की अपेक्षा मुगल काल में शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार एवं विकास हुआ। मध्यकाल में उत्तर भारत में मुस्लिम शिक्षा के प्रमुख केन्द्र उन समस्त स्थानों पर थे, जो मुगल शासकों की राजधानी अथवा प्रशासनिक केन्द्र के रूप में रहे थे। इसमे दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी, जौनपुर, मालवा, गुजरात, बिहार (पटना, भागलपुर), पंजाब,कश्मीर,बीदर आदि प्रमुख केन्द्र थे। इन केन्द्रों पर मुस्लिम विद्यार्थी उपस्थित होकर ख्याति प्राप्त विद्वानों से ज्ञान अर्जित करने थे।

इस्लाम धर्म में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया है इस्लाम में शिक्षा का आधार धर्म रहा है। इस्लाम के प्रारम्भिक दिनों में मक्का, मदीना व बसरा आदि नगर इस्लामी शिक्षा के केन्द्र थे।[1] मध्यकाल में बगदाद, दमिश्क, निशापुर शिबली, गजनी आदि नगर इस्लामी शिक्षा के केन्द्र थे। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के पूर्व ही इस्लामी देशों में विकसित शिक्षा प्रणाली की स्थापना हो चुकी थी।

भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ ही मुस्लिम शिक्षा ने भारत भूमि पर पर्दापण किया। तुर्क अथवा मुस्लिम विजताओं ने मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ–साथ इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए शिक्षा को साधन के रूप में प्रयोग किया।[2] मुहम्मद गोरी ने भारत में सर्वप्रथम मंदिरो को नष्ट करके मस्जिद बनवाने तथा उसमे मुस्लिम शिक्षा प्रदान करने की प्रथा प्रारम्भ की। ताज–उल–मआसिर के लेखक हसन निजामी के अनुसार मुहम्मद गोरी 1192 ई0 में अजमेर विजय के

Corresponding Author: sarvesh.chaturvedi.5@gmail.com

उपरान्त मंदिरों को तुडवाकर मस्जिद एवं 11 शिक्षा संस्थाओ की स्थापना की।[3] मुस्लिम आक्रमणकारी अपने साथ विकसित शिक्षा प्रणाली लेकर आये थे। उनकी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को तथा भारतीय संस्कृति ने उनकी संस्कृति को प्रभावित किया, किन्तु शिक्षा के सन्दर्भ में दोनों अपनी शिक्षण प्रणाली का त्याग नहीं कर सके। फलस्वरूप दोनों प्रकार की शिक्षण प्रणाली भारत में प्रचलित रही। मुस्लिम शिक्षा का आधार धर्म था। अतः मस्जिद से सम्बद्व मकतबों, सूफी संतो के खानकाहों एवं मदरसों द्वारा शिक्षा प्रणाली दी जाती थी। सल्तनत काल में जौनपुर, लाहौर, अजमेर, इलाहाबाद, आगरा, दिल्ली, पटना, मुल्तान आदि आदि नगर इस्लामी शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे।[4] सल्तनत काल में अधिकांश सुल्तान शैक्षिणिक एवं साहित्यिक अभिरूचि के थे। उन्होने शिक्षा के विकास के लिए उल्लेखनीय कार्य किये

विशेषकर इल्तुतमिश, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक एवं सिकन्दर लोदी के काल में शिक्षा का विशेष विकास हुआ तथा शिक्षा के अनेक केन्द्र स्थापित हुये।

मध्यकालीन भारत में सल्तनत के समापन के बाद एक नये युग का प्रारम्भ होता है। दिल्ली सल्तनत की अपेक्षा मुगल काल में शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार एवं विकास हुआ। मुगल कालीन शिक्षा के लक्ष्य वही है, जो सल्तनत काल में शिक्षा के मौलिक

लक्ष्य थे। यद्यपि इसमें बदलती हुई राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के कारण कुछ परिवर्तनशील प्रवृत्तियाँ भी दृष्गिोचर होती है।

मध्यकाल में उत्तर भारत में मुस्लिम शिक्षा के प्रमुख केन्द्र उन समस्त स्थानों पर थे जो मुगल शासकों की राजधानी अथवा प्रशासनिक केन्द्र के रूप में रहे थे। प्रारम्भिक शिक्षा मकतबों में प्रदान की जाती थी, जो गाँव, नगर और मुहल्लों की मस्जिदों से सम्बद्व होते थे। लेकिन उच्च शिक्षा का ज्ञान मदरसों में प्रदान किया जाता था, जो कि अधिकांशतः नगर में होते थे। इनमें आगरा, दिल्ली, फतेहपुर सीकरी, जौनपुर, मालवा, गुजरात, बिहार (पटना व भागलपुर), पंजाब, कश्मीर व बीदर आदि प्रमुख केन्द्र थे।[5] इन केन्द्रो पर मुस्लिम विद्यार्थी उपस्थित होकर ख्याति प्राप्त विद्वानों से ज्ञान अर्जित करते थे। उपर्युक्त शिक्षा केन्द्रों के सन्दर्भ में विस्तृत वर्णन निम्नलिखित है–

दिल्ली–

सल्तनत काल में दिल्ली प्रमुख शिक्षा केन्द्रों में से थी, क्योंकि दिल्ली मुस्लिम सुल्तानो की राजधानी रही है। सर्वप्रथम दिल्ली इल्तुतमिश के काल में ही विश्व के विद्वानों तथा उत्तम प्राकृति के व्यक्तियों का आश्रय तथा विश्राम स्थल बनी ।[6] मुगल काल में दिल्ली की पर्याप्त उन्नति हुई और उत्तर भारत में वह शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र बन गयी। हुमायूँ ने दिल्ली में ज्योतिष तथा भूगोल के लिए मदरसा का निर्माण करवाया। अकबर ने भी कुछ मदरसो की स्थापना की तथा उसकी धाय माता माहम अंगना ने 15161ई0 में एक विशाल मदरसे का निर्माण करवाया।[4] बदायूँनी ने इसी मदरसे में शिक्षा पायी थी। [2]जहाँगीर ने भी वहाँ पुराने मदरसों की मरम्मत करवायी थी। शाजहाँ ने जामा मस्जिद के पास एक मदरसे की स्थापना की। दीर्घकाल तक दिल्ली इस्लामी शिक्षा का केन्द्र रही जहाँ से इस्लामी संस्कृति सम्पूर्ण देश में विकसित हुई।

आगरा–

अकबर के समय में आगरा इस्लामी शिक्षा, संस्कृति एवं कला–कौशल का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। देश के विभिन्न भागों से आकर विद्वान, दार्शनिक, सूफी–संत विद्वान तथा कलाकर आगरा में एकत्रित होने लगे।[7] अकबर ने आगरा में मदरसों का निर्माण करवाया। इन मदरसों में साहित्य, गणित, चिकित्सा, कृषि, ज्येतिष तथा वाणिज्य इत्यादि

समस्त विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती थी। यहाँ छात्रवासों की भी व्यवस्था थी जहाँ विदेशों से मुख्यतया मध्य एशिया के देशों से विद्यार्थी आकर शिक्षा प्राप्त करते थे। अकबर का राज्यकाल आगरा नगर की उन्नति का स्वर्ण युग था, क्योकि अकबर ने एक मदरसा का स्वयं निर्माण किया था।[8] इसके साथ अन्य मदरसे मौलाना अलाद्दीन लारी का मदरसा[9] ,रफीउद्दीन सफाकी का मदरसा, मीर कन हरीवा का मदरसा[10] , शेख जियाउद्दीन खाफी का मदरसा[11] तथा अन्य मदरसों की स्थापना आगरा में हुई थी। इसके उपरान्त जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने भी कुछ मदरसो का निर्माण करवाये। औरंगजेब ने यहाँ प्रारम्भिक तथा धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।

फतेहपुर सीकरी–

फतेहपुर सीकरी के सन्दर्भ में यह बात स्मरणीय है कि इसका वैभव एवं ऐश्वर्य राजधानी हटाने के बाद तत्काल समाप्त हो गया था। यह नगर अनेक विद्यालयों एवं शिक्षालयों से भरा पड़ा था। अकबर के शासनकाल में यहाँ बहुत से विद्यालयों एवं खानकाहो की स्थापना की गयी थी। अकबर ने एक विशाल मदरसे की स्थापना करवायी, जिसके विषय में अबुलफजल ने लिखा है कि कुछ ही विद्यार्थी इसके बारे में जानते थे।[12] यहाँ पर बाहर से विद्वान एवं ज्ञान प्राप्त करने के लिए लोग आकर बसने लगे। उन लोगो में कुछ विद्वान अब्दुल कादिर, शेख फैजी और निजामुद्दीन को शिक्षा प्रदान करते थे।[13] अकबर की मृत्यु के साथ ही इसका वैभव समाप्त होने लगा था।

जौनपुर–

जौनपुर मुगलकाल से पूर्व सल्तनत काल से ही शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा। तत्कालीन शिक्षा केन्द्रों मे जौनपुर का भी एक महत्वपूर्ण स्थान था। शर्की सुल्तनो ने यहाँ अनगिनत मदरसों का निर्माण करवाया था। देश के कोने–कोने से विद्वानों तथा तथा आध्यात्मवादियों को आमंत्रित किया। शर्की सुल्तानों ने उन्हे वृत्तियाँ तथा संरक्षण भी प्रदान किये। जौनपुर के मदरसो में धार्मिक शिक्षा के अतिरिक्त साहित्य, व्याकरण, इतिहास, विज्ञान, वाहा शिष्टाचार (अखलाक,सुरिया) आदि की शिक्षा दी जाती थी। हस्तकला व शिल्पकला के लिए जौनपुर कई शताब्दियो तक प्रसिद्व रहा। मुगलकाल में जौनपुर शिक्षा का मुख्य केन्द्र था, जौनपुर को सिराज–ए–हिन्द कहा जाता था। जहाँ विद्यार्थियो और शिक्षकों के खर्च के लिए सरकार की तरफ से अतुल धनराशि निर्धारित थी।[14] मुगलकाल के अंतिम दिनों तक यह विद्या का प्रमुख केन्द्र बना रहा। मुगल साम्राज्य के पतन होने के कारण उत्पन्न होने वाले राजनीतिक विघटन के समय में जौनपुर के विश्वविद्यालय नगर का यश फीका पड़ गया।

मालवा–

समकालीन उल्लेखों द्वारा स्पष्ट होता है कि मुगलकाल के अन्य शिक्षण केन्द्रो में मालवा का भी नाम आता है। सुल्तान महमूद खलजी साहित्य और विद्या का

संरक्षक था। उसने मालवा के विभिन्न भागों मे महाविद्यालयों की स्थापना की थी। सुदूर देशों के विद्वानों और दार्शनिकों को उसने एकत्र किया था। उसके द्वारा विद्वानों तथा विद्यार्थियों की वृत्ति निश्चित की गई थी। लोगों को विद्याध्ययन के योग्य बनाया गया। इस काल में शिराज और

समरकन्द की मालवा प्रदेश से ईर्ष्या होने लगी।[15] सुल्तान महमूद खलजी का पुत्र सुल्तान गयासुद्दीन नारी शिक्षा का विशेष प्रेमी था। स्त्रियों के लिए इसने मदरसे की स्थापना की।[16]

गुजरात–

मुगलों का सूबा होने के कारण शिक्षण का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। उपलब्ध तथ्यों पर स्त्रोतों के आधार पर ज्ञात होता है कि गुजरात सूबे में अनेक नगर शिक्षा केन्द्र के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे, जैसे–अहमदाबाद, सूरज व पाटन आदि। इन स्थानों पर कला तथा विज्ञान दोनों विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी। गुजरात के शिक्षा प्रेमी सुल्तान अहमदशाह ने अहमदाबाद शहर में मदरसों तथा खानकाहों का निर्माण कराया था।[17] यहाँ तर्क अथवा दर्शन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी भारत के दूर–दूर भाग से तथा अन्य देशों के विद्यार्थी आते थे।[18] बुरहानशाह ने अहमदाबाद में एक कॉलेज 'लंगर–इन–दुवाज्दा इमाम' का निर्माण करवाया। जिसमें विशेष रूप से शिया लोगों को शिक्षा दी जाती थी।[18] ईराक, अरब और ईरान से उच्चकोटि के विद्वान इस विद्यालय में अध्यापन का कार्य करने आते थे।[18] यहाँ मदरसों के जीर्णोद्धार के लिए बाद के बादशाहों ने अनुदान के रूप में गुजरात सूबे में शिक्षा के विकास के लिए विशेष रूचि दिखाई थी तथा अनुदान भी प्रदान किया था। मुहम्मद सफी नामक दीवान ने अहमादाबाद किले के सामने तथा सइफ खॉ के मदरसे के समीप एक मदरसे का निर्माण करवाया था।[19] मुगलकालीन प्रमुख शैक्षिणिक गातिविधियों का केन्द्र रहा। शेख गाजी देहलवी एवं अबुल फजल करवानी जैसे विद्वान यहाँ से जुड़े थे।

बिहार–

बिहार में अनेक शिक्षण संस्थाये स्थापित की गयी। मुगल काल में पटना और भागलपुर का नाम प्रमुख था। बिहार के विभिन्न भागों में शिक्षा के कुछ अन्य केन्द्र भी विद्यमान थे। इनमें प्रमुख थे मनेर, बिहार शरीफ, बाढ़, राजगीर व हाजीपुर आदि ज्ञान के प्रमुख केन्द्र थे।

पटना–

पटना नगर में उच्च कोटि के विभिन्न व्यापार एवं पेशा के व्यक्तियों और विशेष रूप से विद्वानो तथा संतो ने आश्रय ले रखा था। इन लोगों ने शिक्षा के विकास और उन्नति में उदारता पूर्वक सहयोग प्रदान किया। [20] पटना नगर को यह सौभाग्य प्राप्त था कि इस नगर ने समय–समय

पर दूसरे स्थानों से आय विद्वानों, कवियों और अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियो का भी हार्दिक स्वागत किया।[20] इन लोगो में मौलाना नादिम गिलानी,

मिर्जा कासिम इमामी इस्फानी, मीर मुहम्मद सैय्यद, रिजै, इब्राहीम हुसैन काबुली और मीर हबीबुल्लाह का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है।[20] पटना का सुबेदार मिर्जा साफल जो सैफ खान के नाम से प्रसिद्ध था। उसका विवाह मुमताज महल की सबसे बड़ी बहन मलिका बानो से हुआ था। उसने पटना में शिक्षा और शिक्षण के प्रचार–प्रसार के लिए एक मदरसा की स्थापना की थी। इस मदरसा में सर्वाधिक उच्च बौद्धिक स्तर के विद्वान और शिक्षकों ने अध्यापन कार्य किया। गंगा के ऊँचे किनारे पर बहुत सुन्दर इमारत स्थित थी, जिसके प0 में एक छोटा सा किला भी था। इसी से लगा मदरसा था, इसकी मस्जिद ऐसा भाग है जो आज भी सुरक्षित अवस्था में स्थित है,[21] जिसमे शिक्षण कार्य किया जाता था। पटना नगर की प्रसिद्धि दीर्घ अवधि तक बनी रही लेकिन धीरे–धीरे इसकी प्रतिष्ठा गिरती रही। मध्यकालीन एक प्रतिष्ठित पुस्कालय आज भी देखने को मिलता है।

भागलपुर–

भागलपुर मुगलकाल में शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था। इस शहर में साधु–संतो जैसे आचार–विचार वाले उच्च नैतिक परिवार फले–फूले जिनके सदस्यों ने शिक्षण कार्य को महान कार्यो एवं पेशों के रूप में अपनाया और स्वयं अपने आप को ज्ञान के विकास में समर्पित कर दिया। ये प्रतिष्ठित परिवार धार्मिक और धर्म निरपेक्ष शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए स्वयं शिक्षण संस्थायें स्थापित की थी।[20] जहाँगीर के शासन काल में मौलाना शाहबाज ने एक मदरसा स्थापित किया था। यह मदरसा सर्वाधिक संगठित एवं ख्याति प्राप्त था। इसमें प्राथमिक शिक्षा के साथ–साथ उच्च इस्लामिक शिक्षा का आवासीय मदरसा था। शाहजहाँ के शासनकाल के बाद तक समय–समय पर मदरसा को बड़ी मात्रा में जागीरें प्रदान किया जाता था। यहॉ पर रहने वाले छात्रों का खर्च वगैरह भी इन्ही जगीरों से प्रदान किया जाता था।[20] शाहजहाँ के प्रारम्भिक काल में उसकी मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के पश्चात् उनके वंशजो ने उनके कार्यो को सफलतापूर्वक चलाया तथा शिक्षा ज्ञान के केन्द्र के रूप में उनकी ख्याति को आगे भी बनाये रखा।[20] इस प्रकार मुगलकाल में भागलपुर में शिक्षा देने की व्यवस्था विद्यमान थी।

सियालकोट–

सियालकोट पंजाब प्रांत का एक नगर था जो शिक्षा के महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में मुगलकाल में चर्चित था। सम्भवतः सियालकोट अकबर के बाद शिक्षा का केन्द्र बना। औरंगजेब के शासन काल में इस शिक्षा के केन्द्र के विकास मे आशातीत उन्नति हुई।[20] इस शहर में उच्च कोटि के कागज शिक्षण कार्य के लिए उपलब्ध होते थे।[20] मुगल बादशाह अकबर के शासन काल में कश्मीर का सूबेदार हुसैन खान, मुहम्मद कमाल पर अत्यन्त क्रोधित हुआ तो वह 1564ई0 में कश्मीर से सियालकोट आ गया। यहाँ पर स्वयं अध्यापन कार्य शुरू किया और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने का कार्य किया।[20]

शाहजहाँ के शासन काल में मौलवी अछुल हकीम ने इस शहर के प्रति निरंतर अध्यापन कार्य में अभिरूचि रखे रहा, जिसकी विद्वता सुनकर दूर–दूर के विद्यार्थी अध्ययन के प्रति आकर्षित होकर चले आते थे। [22] मुगलकाल में सियालकोट शिक्षा क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। लेकिन उसके पतन के साथ–साथ धीर–धीरे इस केन्द्र का महत्त्व कम होने लगा जो अब प्रायः विलुप्त सा हो गया।

कश्मीर –

कश्मीर सुरम्य वातावरण तथा आनन्ददायी जलवायु के कारण विद्या का अच्छा केन्द्र था। कुछ अमीर व विद्वान कश्मीर की घटियों में भी अपनी रचनायें लिखा करते थे। मुगलकाल में कश्मीर गर्मी के दिनों में शिक्षण गातिविधियों का प्रसिद्ध केन्द्र था। अकबर के शासन काल में हिन्दू और मुस्लिम दोनों अध्ययन करने आते थे। परन्तु औरंगजैब के शासन काल में धर्मिक रूप से शिक्षण केन्द्र हो गया।[23] अकबर के शासन काल में विशेष रूप से शैक्षणिक गातिविधियों का महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया था।[20] शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा के शिक्षक ममुल्ललाशाह बख्शी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा कश्मीर से प्राप्त की थी।[14] शाहजहाँ के युग का पद्य के रूप में वर्णन करने के लिए मिर्जा तालिब कालिम कश्मीर ही गये थे।[24]

लाहौर–

मुगलकाल में लाहौर भी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। मनूची लिखता है कि यहाँ बहुत से विद्वान है जिन्हे 'तालिब–उल–इलम ' कहा जाता था।[25] इस शहर को शिक्षा के रूप में प्रसिद्धि प्रदान करने वाले विद्वानों में ताना मौलाना जलाल, मुल्ला इमानुद्दीन, शेख वहलुल और मुल्ला सदुल्लाह लाहौरी

आदि महत्वपूर्ण थे। विद्वान महत्त्वपूर्ण समय नवयुवकों को शिक्षा देने में व्यतीत करते थे। यहाँ महाभारत तथा राजतंरगिणी जैसी पुस्तकों का फारसी मु अनुवाद भी हुआ।[20] औरंगजेब के शासन काल में लाहौर शिक्षा केन्द्र के रूप में विशेष प्रतिष्ठित था और प्रतिष्ठा के कारण दूर–दूर के विद्वानों तथा विद्यार्थियों को आकर्षित करता था।[20]

बीदर–

बीदर शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थां। महमूद गवाँ ने वहाँ एक विशाल मदरसा बनवाया जिसमे कई सौ पुस्तकों से सुसज्जित एक पुस्तकालय भी था।[7] कुछ समय बाद औरंगजेब ने इस नष्ट कर दिया।[4] मकतब मस्जिदों से लगे हुये थे इनके खर्चे के लिए बड़ी–बड़ी जागीरें प्रदान कर दी गयी थी। बीदर में ऐसा कोई भी छोटा से छोटा गाँव नहीं बचा था, जहाँ एक मकतब न हो।[4] ग्रामीण मकतबों द्वारा फारसी और अरबी का प्रचार–प्रसार किया गया। इनमें प्रायः शिक्षा एक प्रकार की थी जिसका उद्देश्य साहित्य का प्रचार–प्रसार था उतना ही शासको के धार्मिक विश्वासों और विद्वानों का प्रचार भी था।[7]

मुगलों के पतन के बाद भी बीदर में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य होते रहे जिसके चिन्ह आज भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है।

मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं में उच्च शिक्षा के लिए शिक्षकों की एक विशिष्ट श्रेणी थी। मध्यकाल में जब मुस्लिम शिक्षा की प्रगति अपने चरम सीमा पर थी। तब देश में अनेक विद्वान थे। उपर्युक्त प्रमुख शिक्षा केन्द्रो के अतिरिक्त भारत के विभिन्न भागों में शिक्षा के कुछ अन्य केन्द्र भी थे। उन केन्द्रों में फिरोजाबाद, जालन्धर, अजमेर, बदायूँ, उच्छ, सम्भल, मुल्तान, बीजापुर तथा अहमदनगर की गणना होती थी।

सन्दर्भ–

(1) अली सैय्यद अमीर, ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ द सारासेन्स (लंदन,1995) पृ0–206

(2) रावत पी0एल0, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजूकेशन (आगरा, 1956) पृ0–84,112

(3) निजामी हसन, ताज–उल–मआसिर (अनु0 इलियट) भारत का इतिहास, भाग–2 (आगरा, 1974) पृ0–157

(4) की एफ0 ई0, ए हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान (कलकत्ता, 1959) पृ0–148,116,149

(5) ओझा पी0एन0, मुगलकालीन भारत का सामाजिक जीवन (नई दिल्ली 1984) पृ0–71

(6) सिराज मिनहाज, तबकात–ए–नासिरी (अनु0ए0सी0रैवटी) (दिल्ली 1970) पृ0–599

(7) जाफर एस0एम0, एजूकेशन इन मुस्लिम इण्डिया (दिल्ली 1973) पृ0–57–58,121–126

(8) की एफ0ई0, इण्डियन एजूकेशन इन एनशियन्ट एण्ड लेटर टाइम्स (आक्सफोर्ड 1950) पृ0–119

(9) बदायूँनी, मुन्तखब–उत–तवारीख भाग–2 (अनु0लो) पृ0–53

(10) तकबत–ए–अकबरी (अनु0बी0डे) भाग–2 (कलकत्ता 1941) पृ0–694–695

(11) बदायूँनी, मुन्तखब–उत–तवारीख (अनु0 रैकिंग) भाग–1 (पटना 1973) पृ0–609–611

(12) आइन–ए–अकबरी (अनु0जैरेट) भाग–2 पृ0–180

(13) इलियट एण्ड डाउसन, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया ऐज टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स भाग–4 (लंदन 1887) पृ0–176

(14) ला एन0 एन0, प्रमोशन ऑफ लर्निंग इन इण्डिया ड्यूरिंग मुहम्मडन रूल (दिल्ली 1973) पृ0–104–105, 204

(15) तबकात–ए–अकबरी भाग–3 (अनु0बी0डे) पृ0–498

(16) रिजवी सैय्यद अहतर अब्बास, उत्तर तैमूर कालीन भारत 2 (अलीगढ़ 1959) पृ0–163

(17) जाफर एस0एम0 ,एम कल्चरल आस्पेक्ट्स ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया (पेशावर 1938) पृ0–75

(18) रे कृष्ण लाल, एजूकेशन इन मेडिवल इण्डिया (दिल्ली 1984) पृ0–41

(19) खाँ अली मुहम्मद, मिरआत–ए–अहमदी (सम्पा0 सैय्यद नवाब अली) भाग–1 (बडौदा 1965) पृ0–209

(20) सहाय, बी0के0 , एजुकेशन एण्ड लर्निंग अण्डर द ग्रेट मुगल्स (बम्बई 1968) पृ0–39,40,42,44,34,96,33,34,34

(21) पीटर मुण्डी, द ट्रैवेल्स ऑफ पीटरमुण्डी इन यूरोप एण्ड एशिया (1608–1667)(सम्पा0 आर0सी0टेम्पिल) भाग–2 (लंदन 1914) पृ0–159

(22) सरकार जदुनाथ, इण्डिया ऑफ औरंगजेब (कलकत्ता 1912) भाग–1 पृ0–97

(23) खाँ साकी मुस्ताइद, मआसिर–ए–आलमगिरी (अनु0जदुनाथ सरकार) (कलकत्ता 1947) पृ0–51

(24) सक्सेना बनारसी प्रसाद, मुगल सम्राट शाहजहाँ (जयपुर 1974) पृ0–123

(25) मनुची निकोलस,स्टोरिया–डी–मोगोर (अनु0 विलियम इरविन) भाग–2 (लंदन 1907–08) पृ0–424